Approved Research Topic

परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN EDUCATION

From

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

Anup Kumar Shukla

Enrollment no. 2300901

Under the supervision of

Dr. Dinesh Singh

Associate Professor

School of Education

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipuram, (Sector-F) Phaphamau, Prayagraj- 211021

School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis - Research Topic "परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year-2024

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Dinesh Singh and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted

Anup Kumar Shukla
Enrollment No. - 2300901

Research Supervisor

06/08/2025

Dr. Dinesh Singh
Associate Professor, School of Education

06.08.2025

Prof. P. K. Astalin
(Director, School of Education)

06/08/25

Prof. P. K. Pandey
(Director, R&D Cell)

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-7
3	Description Broad Area	7-8
4	Objectives of the Study	8-8
5	Research Methodology	8-11
6	Expected Outcome of the Research	11

References

Plagiarism Report

सारांश

वर्तमान शोध सारांश "परम्परागत एवं मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन" विषय की रूपरेखा है। इस शोध कार्य में शिक्षा के माध्यम, उसकी पारंपरिक शिक्षा प्रणाली तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का अध्ययन किया गया । शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है, जिसके द्वारा व्यक्ति के जीवन स्तर को ऊपर उठाया जा सकता है । शिक्षा की प्रणाली ऐसी होनी चाहिए, जिससे सबसे निचले स्तर का व्यक्ति भी लाभान्वित हो सके तथा वैश्वीकरण के इस युग में अपनी भूमिका निर्धारित कर सके । बच्चों तक शिक्षा पहुंचाने के लिए पारंपरिक शिक्षा प्रणाली तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली माध्यमों का उपयोग किया जाता है । वर्तमान समय में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को एक बहुत ही महत्वपूर्ण शैक्षिक दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार किया गया है ।

मुख्य शब्द - स्नातक स्तर, पारंपरिक शिक्षा, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा आदि ।

1. प्रस्तावना :–

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि :–

शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है।

शिक्षा के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।" शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह विकास का मूलाधार है, किसी भी राष्ट्र का विकास शिक्षा के अभाव में असम्भव है चाहे वह राष्ट्र कितने ही प्राकृतिक संसाधनों से आच्छादित क्यों न हो। आज के बदलते परिवेश में परिवर्तन की धारा ने शिक्षा को विशेष रूप से प्रभावित किया है। जहाँ एक ओर मानवीय सम्बन्धों में बदलाव आया है, वहीं विज्ञान के बढ़ते चरण ने शिक्षा की दशा व दिशा दोनों ही परिवर्तित किए हैं। वैज्ञानिक आविष्कारों से प्रत्येक क्षेत्र में युगान्तकारी परिवर्तन हुए हैं। मनुष्य में तकनीकी उन्नति के माध्यम से स्वयं का जीवन उन्नत किया है। सम्पूर्ण विश्व में वैश्वीकरण व मुक्त अर्थव्यवस्था का बोलबाला है। अब प्रश्न यह उठता है कि परिवर्तन की इस आँधी में क्या प्रत्येक व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक व आर्थिक विकास हुआ है? यदि नहीं तो इसमें सुधार की क्या सम्भावना तलाशी जाए? शिक्षा ही वह साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति के जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि निम्नतम से निम्नतम व्यक्ति इसके द्वारा लाभान्वित हो सके और वैश्वीकरण के इस दौर में अपनी भूमिका निश्चित कर सके। शिक्षा को बच्चों तक प्रसारित करने के लिए परम्परागत

था। फिर इसमें तकनीकी शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा को भी जगह दे दी गयी। जब तक ये संस्थान सीमित थे इनकी गुणवत्ता पर संदेह नहीं किया जा सकता था। भारत की मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में राज्यों के मुक्त विश्वविद्यालय, शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाएं तथा विश्वविद्यालय शामिल है तथा इसमें दोहरी पद्धति के परम्परागत विश्वविद्यालयों के पत्राचार पाठ्यक्रम संस्थान भी शामिल है। यह प्रणाली सतत् शिक्षा, सेवारत कार्मिकों के क्षमता–उन्नयन तथा शैक्षिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षुओं के लिए गुणवत्तामूलक तर्क संगत शिक्षा के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। शैक्षिक क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा एक नवाचार तथा नई प्रवृत्ति के रूप में विगत कुछ दशकों से प्रचलित है। जनसंख्या विस्फोट, संसाधनों की सीमितता तथा शिक्षा की आवश्यकता ने दूरस्थ शिक्षा को लोकप्रिय बना दिया। दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। यह उन छात्रों के लिए एक वरदान है जो परम्परागत प्रकृति की औपचारिक शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन नहीं कर सकते। कर्मचारीगण, मजदूर, विकलांग, गृहणियां आदि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करके लाभान्वित हो सकते हैं। निर्धनों, निर्जन क्षेत्रों तथा सुदूर प्रदेशों में रहने वालों तक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा का प्रकाश पहुँचाया जा सकता है। वर्तमान समय में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को एक अत्यंत महत्वपूर्ण शैक्षिक उपागम स्वीकार किया गया है।

1.2 समस्या की उत्पत्ति :–

परम्परागत शिक्षा प्रणाली में छात्र, शिक्षक के समीप जा कर शिक्षा ग्रहण करता है। जिसमें शिक्षक छात्र को विषय ज्ञान एवं कौशल प्रदान

करता है और छात्र भी अनुसरण करता है। परन्तु कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो समय अभाव, पेशेवर या गरीब होने के कारण विद्यालय में जा कर शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते हैं। ऐसे छात्र मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ज्ञान तथा कौशल प्राप्त करते हैं। ऐसे में दोनों शिक्षा प्रणालियों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों का आत्मविश्वास प्रसन्नता एवं समायोजन अलग–अलग होगा। अतः शोधकर्ता यह जानने का प्रयास करना चाहता है कि परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन अंतर है, कि नहीं। यदि अन्तर हो तो कितना प्रभावित करता है।

प्रस्तुत शोध कार्य की आवश्यकता इसलिये भी है क्योंकि पूर्व में परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म विश्वास, प्रसन्न्ता एवं शैक्षिक समायोजन से सम्बन्ध के विषय में शोध कार्य नहीं हुआ है।

1.3 शोध प्रश्न :–

1. क्या परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म विश्वास में अन्तर होता है?
2. क्या परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता में अन्तर होता है?
3. क्या परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में अन्तर होता है?

4. क्या परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध होता है?

1.4 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :—

- एकीक और टोनसी (2013) के अध्ययन से पता चलता है कि प्रसन्नता को अचेतन, संज्ञानात्मक और प्रेरक प्रक्रियाओं के एक बहुआयामी घटक के रूप में होता है। जो व्यक्तियों द्वारा जीवन की व्याख्या और ग्रहण करने के तरीके के लिए अद्वितीय है।
- क्रॉसली और लैंड्रिज (2005) के अध्ययन से पता चलता है कि कालेज की आबादी के बीच प्रसन्नता पर किये गये अध्ययन के अनुसार, छात्रों का मानना है कि प्रसन्नता के मूल संरचना में उच्च आत्म–सम्मान, उच्च आत्मविश्वास, सामाजिक कारक, व्यावसायिक कारक और पारिवारिक कारक शामिल है।
- शिफ्रिन और नेल्सन (2010) के अध्ययन से पता चलता है कि कालेज के छात्रों को कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो उनकी समग्र प्रसन्नता को प्रभावित करते हैं। जिन छात्रों में तनाव का स्तर उच्च होता है, उनमें उच्च कथित प्रसन्नता की रिपोर्ट करने की संभावना कम होती है।
- न्याज़ेव एवं अन्य (2002), माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का समायोजन एक ऐसी घटना है जो शिक्षाविदों के साथ–साथ स्वास्थ्य चिकित्सकों के लिए भी बड़ी चिंता का विषय है। शिक्षाविदों को यह जानने की

जरूरत है कि वे अपने छात्रों को स्कूल से समायोजित करने और लाभ उठाने में मदद करने के लिए क्या कर सकते हैं। दूसरी ओर स्वास्थ्य चिकित्सक छात्रों की भलाई के बारे में चिंतित हैं

- एडलर, राजू, बेवरिज, वांग, झू और जिम्मरमैन (2008) ने विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन किया और पाया कि कालेज में समायोजन कॉलेज के छात्रों की शैक्षणिक सफलता निर्धारित करता है। खराब कालेज समायोजन का संबंध खराब शेक्षणिक प्रदर्शन, कम स्नातक दर और बाद में जीवन में खराब सफलता से है। कॉलेज परिवर्तन के लिए व्यवहार, संज्ञानात्मक और बौद्धिक जुड़ाव की आवश्यकता हो सकती है।
- वैन रूइज एवं अन्य (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यवहारिक और संज्ञानात्मक जुड़ाव का छात्र के शैक्षणिक समायोजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जिससे छात्रों ने जुड़ाव के इन क्षेत्रों में कम अंक प्राप्त किए, उनके स्कूल में प्रदर्शन सम्बंधी समस्यायें होने की अधिक संभावना थी।
- हबीबा एवं अन्य (2010) ने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षणिक समायोजन का अध्ययन किया और पाया कि किसी वि0वि0 का पहला वर्ष रोमांचक और चुनौतीपूर्ण हो सकता है और नए वातावरण में प्रवेश करने पर छात्र की अलग–अलग प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं। छात्रों का समस्याओं से निपटने का तरीका एक दूसरे से भिन्न होता है। कुछ लोग स्थिति और वातावरण से निपटने में सक्षम थे जबकि अन्य लोग

अभिभूत महसूस करते हैं, और विश्वविद्यालय के जीवन से निपटने में असफल हो जाते हैं।

- सना और पुसेकर (1994) उच्च आत्म विश्वास किसी व्यक्ति को किसी व्यवहार में अधिक बार शामिल होने के लिए प्रेरित कर सकता है, शोध में पाया गया है कि वे समय के साथ अपने व्यवहार को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करते हैं, अधिक सामाजिक आत्मविश्वास वाला व्यक्ति सामाजिक परिवेश का आकलन करने और उसमें अपनी स्थिति को समझने में सक्षम होगा।
- अल–सिबाई (2005) ने कक्षा में अभिव्यंजक गतिविधियों में भाग लेने की इच्छा रखने वाले छात्रों पर आत्मविश्वास के प्रभाव पर एक अध्ययन आयोजित किया गया है, कम आत्मविश्वास वाले छात्र सार्वजनिक रूप से वाक्यांश का उपयोग करने में संकोच करते हैं क्योंकि वे हैं न्यास किये जाने या अस्वीकृत किया जाने का डर। परिणामस्वरूप उनकी सफलतादर कम होती है। क्योंकि उच्च आत्म विश्वास एक शिक्षार्थी को बोलने की इच्छा को बढ़ा सकता है और उन्हें अपने भाषा कौसल को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है। इससे शैक्षणिक सफलता में भी सुधार हो सकता है।
- मकवाना और काजी (2014) ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिंग के सम्बंध में समायोजन पर एक अध्ययन किया। परिणाम से पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं के घर, स्कूल और भावनात्मक समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। लेकिन लड़कों

और लड़कियों के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के सामाजिक समायोजन में 0.05 के स्तर पर महतवपूर्ण अंतर है। इसका मतलब है कि लड़के लड़कियों की तुलना में सामाजिक समायोजन में बेहतर होते हैं।

- ❖ शाइन्स और स्केज़नी (2010) संगठनात्मक साहित्य ने औपचारिक प्रबंधन भूमिकाओं में नेतृत्व क्षमता का समर्थन करने में आत्म विश्वास की भूमिका की जाँच की है। यह पाया गया है कि अच्छे प्रबंधकों में मजबूत आत्म–प्रभावकारिता के परिणामस्वरूप नेतृतव क्षमता होती है।
- ❖ कौर एवं चावला (2018) ने किशोरो में शैक्षणिक चिन्ता और स्कूल समायोजन का अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि अनाथालयों में रहने वाले किशोरों को अपने परिवार के साथ रहने वाले किशोरों की तुलना में शैक्षणिक चिन्त कम थी और किशोर लड़कियों के स्कोर लड़कों की तुलना में अधिक थे। स्कूल समायोजन पर प्राप्त स्कोर से पता चलता है कि परिवारों के साथ रहने वाले किशोरों में अनाथालयों में रहने वाले किशोरों की तुलना में स्कूल समायोजन बेहतर था और कुल मिलाकर लड़कियों का समायोजन स्तर लड़कों से कम था।
- ❖ गुप्ता एवं गुप्ता (2011) ने अपने अध्ययन के आधार पर पाया कि लड़कियाँ सामाजिक समायोजन में बेहतर थी जबकि शैक्षिक समायोजन में लड़कें और लड़कियों का समायोजन समान स्तर का था।
- ❖ गहलावत (2011) ने लिंग के आधार पर छात्रों के समायोजन का अध्ययन किया। छात्रों में भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक तथा कुल समायोजन में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

❖ हुसैन एवं अन्य (2008) ने यह अध्ययन किशोरों में शैक्षणिक तनाव एवं समायोजन स्तर ज्ञात करने तथा सरकारी एवं पब्लिक स्कूल के छात्रों के बीच समग्र समायोजन व शैक्षणिक तनाव एवं समायोजन के पारस्परिक सम्बन्ध ज्ञात करने के उद्देश्य से किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि पब्लिक स्कूल के छात्रों में सरकारी स्कूल के छात्रों की तुलना में शैक्षणिक तनाव अधिक था तथा समायोजन स्तर भी सरकारी स्कूल के छात्रों का पब्लिक स्कूल के छात्रों की तुलना में काफी बेहतर था।

❖ डेका (2017) ने "माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के बीच समायोजन की समस्या" पर अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि छात्राओं के शैक्षिक समायोजन समस्याओं के सम्बंध में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की किशोर छात्राओं के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है, लेकिन सामाजिक और भावनात्मक समायोजन समस्याओं के सम्बंध में शहरी और ग्रामीण छात्राओं के बीच सार्थक अंतर पाया गया।

1.5 समस्या कथन :–

परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन।

1.6 अध्ययन में प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषा :–

आत्म विश्वास : आत्मविश्वास से तात्पर्य किसी व्यक्ति के जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने और किसी कार्य को प्रभावशाली ढंग से करने की क्षमता से है। आत्मविश्वास व्यक्ति में सकारात्मकता एवं स्वयं के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रदान करता है।

प्रसन्नता : प्रसन्नता मन की वह अवस्था है जो व्यक्ति के जीवन को आत्मसंतुष्ट एवं सकारात्मक बनाती है। यह सकारात्मक संवेगात्मक भावनाओं (संतुष्टि, सहानुभूति, कृतज्ञता, मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मक सोच) का परिणाम है।

शैक्षिक समायोजन : शैक्षिक समायोजन वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी अपने विद्यालयी वातावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध प्राप्त करने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करते हैं।

2. **अध्ययन के उद्देश्य :–**

1. परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
2. परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता का अध्ययन करना।
3. परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का अध्ययन करना।
4. परम्परागत शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं प्रसन्नता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
5. परम्परागत शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
6. परम्परागत शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के प्रंसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
7. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं प्रसन्नता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

8. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

9. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

(प्रस्तुत उद्देश्यों का अध्ययन लिंग के सन्दर्भ में भी किया जायेगा।)

3. शोध परिकल्पनाएं :—

1. परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर होता है।
2. परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता में सार्थक अन्तर होता है।
3. परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अन्तर होता है।
4. परम्परागत शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं प्रसन्नता के मध्य सहसम्बन्ध होता है।
5. परम्परागत शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध होता है।
6. परम्परागत शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध होता है।
7. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं प्रसन्नता के मध्य सहसम्बन्ध होता है।

8. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध होता है।

9. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध होता है।

(प्रस्तुत परिकल्पनाओं का परीक्षण लिंग के संदर्भ में भी किया जायेगा।)

4. शोध अभिकल्प एवं कार्य प्रणाली :–

शोध अभिकल्प कार्यप्रणाली से आशय है कि इसमें शोधकर्ता शोध कार्य को सम्पादित करने के लिए एक रूप रेखा तैयार करता है। यह शोध प्रक्रिया को कुशल और आसान प्रगति प्रदान करता है। शोध अभिकल्प, शोधकर्ता के लिये समय–समय पर दिशा–निर्देश का काम करता है। शोध अभिकल्प से शोध की सीमा और कार्य क्षेत्र परिभाषित होता है।

करलिंगर के अनुसार, "शोध–अभिकल्प शोध की वह योजना संरचना तथा प्रणाली हैं, जिसका उद्देश्य होता है शोध–प्रश्नों के उत्तरों को प्राप्त करना तथा विचलन को नियंत्रित करना।

4.1 **शोध विधि :** प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति, उद्देश्य एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

4.2 **अध्ययन में प्रयुक्त चर :–**

1. **स्वतन्त्र चर :** पारम्परिक शिक्षा, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा।
2. **आश्रित चर :** आत्मविश्वास, प्रसन्नता, शैक्षिक समायोजन।

4.3 जनसंख्या :–

शोधकर्ता द्वारा उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज तथा प्रो0 राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय प्रयागराज द्वारा संचालित समस्त संस्थानों में पढ़ने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया जायेगा।

4.4 **प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन प्रविधि :–**

शोधकर्ता द्वारा परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया जायेगा।

4.5 **प्रयुक्त शोध उपकरण :–**

1. हिमांशी रस्तोगी तथा जानकी मूरजनी द्वारा निर्मित 'हैपीनेस स्केल' का प्रयोग स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की हैपीनेस के मापन हेतु किया जायेगा।
2. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित 'सेल्फ कान्फीडेन्स इन्वेन्टरी' का प्रयोग स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की आत्मविश्वास के मापन हेतु किया जायेंगा।
3. शोधकर्ता द्वारा शैक्षिक समायोजन के मापन हेतु "स्वनिर्मित इन्वेंन्टरी" का प्रयोग करेगा।

5. **सांख्यिकीय विधि :–**

- प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों का संकलन प्राथमिक स्रोत का प्रयोग करके मात्रात्मक रूप में प्राप्त किया जायेगा।

- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता परम्परागत तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, प्रसन्नता एवं शैक्षिक समायोजन का अध्ययन एवं सहसम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए प्रदत्तों की विशेषताओं के आधार पर एनोवा (ANOVA), पियर्सन गुणन आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक, टी–परीक्षण आदि उपयुक्त सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

6. **अध्ययन की परिसीमायें :–**

1. प्रस्तुत अध्ययन परम्परागत शिक्षा प्रदान करने वाले केवल प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय प्रयागराज एवं उससे सम्बद्ध महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने वाले केवल राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज द्वारा संचालित संस्थानों के स्नातक स्तर के शिक्षार्थियों तक ही सीमित है।

7. **अध्यायीकरण :–**

प्रस्तुत अध्ययन को पाँच अध्यायों में वर्णित किया जायेगा जो इस प्रकार है–

अध्याय–1 प्रस्तावना

अध्याय–2 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

अध्याय–3 अनुसंधान अभिकल्प

अध्याय–4 प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय–5 शोध निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ

- संदर्भ ग्रन्थ सूची
- परिशिष्ट

Anupama Shukla

7. संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

- एनिक, पी0 एवं टान्सिक, एम0 (2013), ओरिएन्टेशन टू हैप्पिनेस, सब्जेक्टिव वेल बींग एण्ड लाइफ गोल्स, साइकोलाजिकल टापिक्स, 22 (10), 135–133.
- बर्गेस, टी, क्रोकोम्बे, एल0, केली, जे0, सीट, पी0एस0 (2009), द इफेक्ट ऑफ कल्चरल बैकग्राउण्ड आन द एकेडमिक एडजेस्टमेंट ऑफ फस्ट ईयर डेंटल स्टूडेंट्स। एगो, 1(2), 5–24
- जेंडेस, एच0 एण्ड मैलिनक्रोड्ट, बी0 (1994), इमोशनल , सोशल एण्ड एकेडमिक एडजेस्टमेंट ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स : एलोगिट्यूडनल स्टडी ऑफ रिटेंशन जर्नल ऑफ काउंसलिंग एण्ड डेवलपमेंट, 72(3), 281–288
- बसू, एस0 (2012), एडजस्टमेन्ट ऑफ सेकन्ड्री स्कूल स्टूटेन्ट, ऐन इण्टरनेशनल पियर रिवाइव्ड स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर इण्टरडिसीप्लीनरी स्टडीज, 1, 3
- ल्यू बोनेस्की, एस0, टीकाच, सी0 एण्ड डी माटीओ, एम0आर0 (2005) व्हाट आर द डिफरेन्स बिटविन हैपीनेस एण्ड सेल्फ स्टीम? सोशल इण्डीकेटर्स रिसर्च, 78(3), 363–404
- शर्मा एन0, गुलाटी जे0, जेण्डर डिफरेन्स इन हैपीनेस, सेल्फ स्टीम एण्ड पर्सनालिटी ट्रेट्स इन एडोयलसेन्ट्स लिविंग इन सोसियोइकोनॉमिक हार्डशिप, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ होम साइन्स 2015; 1(1) : 18–25.
- गोयल, आई0 एण्ड गोयल, एस0जी0 (2000), डिस्टेन्स एजूकेशन इन द ट्वेन्टी फर्स्ट सेन्चुरी, डी पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड नई देलही–110027
- रेड्डी, वी0वी0 एण्ड मनुलिका एस0 (2000), द वर्ल्ड ऑफ ओपेन एण्ड डिस्टेन्स लर्निंग, विवा बुक्स प्रा0 लिमिटेड, नई देलही।

❖ राय, ए0एन0 (2000), डिस्टेन्स एजूकेशन ओपेन लर्निंग वर्सेज वर्चूअल यूनिवर्सिटी कान्सेप्ट्स ऑथर्स प्रेस, नई देलही।

❖ शर्मा, एस0 एण्ड पांडा (1996), ओपेन एण्ड डिस्टेन्स एजूकेशन रिसर्च एनालिसिस एण्ड एन्नोलेशन, इण्डियन डिस्टेन्स एजूकेशन एसोसिएशन काकतीय, यूनिवर्सिटी।

❖ रामविजम, पी0आर0 (2006), ग्लोबलाइजेशन, एजूकेशन एण्ड ओपेन डिस्टेन्स लर्निंग, शिप्रा पब्लिकेशन, देलही।

❖ दयाल प्यारी (2011), थ्योरी एण्ड डिस्टेन्स एजूकेशन : ऐट ए ग्लान्स, प्रजेन्टेड ऐट फिफ्थ इण्टरनेशनल कान्फ्रेन्स ऑन डिस्टेन्स लर्निंग एण्ड एजूकेशन, आईपीसीएसटीटी वाल्यू0 12

❖ होम्बर्ग0 बी0 (2003), डिस्टेन्स एजूकेशन इन इसेन्स : ऐन ओवरव्यू ऑफ थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस इन द अर्ली ट्वेन्टी फर्स्ट सेन्चयुरी (सेकण्ड एडीशन), सेन्टर फॉर डिस्टेन्स एजूकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ ओल्डेनबर्ग।

❖ गुप्ता, एस0पी0 (2004) : हिस्ट्री, डेवलपमेन्ट एण्ड प्राब्लम ऑफ इण्डियन एजूकेशन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

❖ अनूपमा सिंघल एण्ड एस0पी0 कुलश्रेष्ठ (2012) : इसेन्सियल ऑफ एजूकेशन टेक्नोलॉजी, अग्रवाल पब्लिकेशन, पटना।

❖ मिश्रा, एस0 (2004) इनेबलिंग टेक्नोलॉजी फॉर द डिसेबल्ड, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ डिसेबिलिटी स्टडीज, 1(2), 114–114

❖ मोगन, सी0 एण्ड रैली, एम0 (1999) एसेसिंग ओपेन एण्ड डिस्टेन्स लर्नर्स, लन्दन : कोगन पेज

❖ शर्मा, आर0ए0 (1995), डिस्टेन्स एजूकेशन : थ्योरी, प्रैक्टिस एण्ड रिसर्च

❖ सिराइड (2008) : ईएस–311 ग्रोथ एण्ड फिलॉसफी ऑफ डिस्टेन्स एजूकेशन, ब्लाक 1 सोशियो एकेडमिक इशूज, इन्दिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (आईजीएनओयू) न्यू देलही।

❖ सिराइड (2008) : ईएस–311 ग्रोथ एण्ड फिलॉसफी ऑफ डिस्टेन्स एजूकेशन, ब्लाक 5 ग्रोथ एण्ड इनोवेशन्स : ग्लम्पसेस–2, इन्दिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (आईजीएनओयू) न्यू देलही।

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Anoop Shukla
Title	Manav Mulya aur Pathyakram Nirman
Paper/Submission ID	4200444
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-08-02 14:26:07
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**3%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File